

पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ०प्र०

धन्वन्तरि जयन्ती के अवसर पर राज्यपाल ने 'शतायु की ओर' पत्रक के 15वें अंक का लोकार्पण किया
धन्वन्तरि वाटिका में राज्यपाल ने 'मेदासक' का पौधा रोपित किया
तुलसी, नीम और हल्दी आदि आयुर्वेदिक औषधियाँ अमूल्य धरोहर - राज्यपाल
दीपावली की बधाई, प्रकाश पर्व को ध्वनि पर्व न बनायें - श्री नाईक

लखनऊ: 09 नवम्बर, 2015

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल, श्री राम नाईक ने आज धन्वन्तरि जयन्ती के अवसर पर राजभवन में 'शतायु की ओर' पत्रक के 15वें अंक का लोकार्पण किया तथा राजभवन स्थित धन्वन्तरि वाटिका में 'मेदासक' का पौधा रोपित किया तथा लेडी गवर्नर श्रीमती कुंदा नाईक ने 'रक्तचंदन' का पौधा रोपित किया। इस अवसर पर कृषि उत्पादन आयुक्त उ०प्र० श्री प्रवीर कुमार ने 'मेदासक', प्रमुख सचिव स्वास्थ्य श्री अरविन्द्र कुमार ने वन्य बदाम तथा प्रमुख सचिव श्री राज्यपाल सुश्री जूथिका पाटणकर द्वारा 'सिन्दूर' का पौधा रोपित किया गया। इसके पूर्व राज्यपाल ने आयुर्वेद के प्रवर्तक श्री धन्वन्तरि जी का पूजन एवं माल्यार्पण किया।

राज्यपाल ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आयुर्वेद एवं औषधीय पौधों पर्यावरण के अंग हैं। पर्यावरण को शुद्ध रखने की दृष्टि से घर में तुलसी रोपने, पूजा करने व उसकी परिक्रमा की परम्परा है। उसी तरह नीम, गिलोय, हल्दी आदि आयुर्वेदिक औषधियाँ हमारी अमूल्य धरोहर हैं। उन्होंने कहा कि हमारी परम्परा के पीछे शास्त्र और विज्ञान है, जो पर्यावरण के प्रति जागृति का संदेश देते हैं। शतायु की ओर का यह 15वाँ अंक औषधि पौधों के बारे में है जिसमें स्वास्थ्य के लिए तुलसी, नीम, हरसिंगार और गिलोय के गुण एवं उपयोग की जानकारी दी गयी है जो जनोपयोगी है।

श्री नाईक ने इस अवसर पर पूर्व राज्यपाल स्व० विष्णुकान्त शास्त्री जो राजभवन में 2001 में स्थापित धन्वन्तरि वाटिका के जनक थे, को याद करते हुए कहा कि वे विद्वान थे जो हर धर्म, आध्यात्म, साहित्य और अनेक गूढ़ विषयों की जानकारी रखते थे। स्व० विष्णुकान्त शास्त्री से उनके पुराने सम्बन्ध के साथ कुछ समानतायें भी रही हैं। धन्वन्तरि वाटिका राजभवन की शान है। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद का ज्ञान असीम और निरापद है जिसके विकास से सम्पूर्ण स्वास्थ्य की कल्पना की जा सकती है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर प्रकाश पर्व दीपावली की बधाई देते हुए कहा कि प्रकाश पर्व को ध्वनि पर्व न बनाये। तेज आवाज वाले पटाखों से पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। आज कल विद्युत बल्ब से दीपावली पर सजावट होती है। राजभवन आगे से दीपावली पर मिट्टी के दीपक जलाने की परम्परा को प्रोत्साहित करेगा।

इस अवसर पर सचिव उद्यान श्रीमती निवेदिता शुक्ला वर्मा, सचिव वन श्री सुनील पाण्डे, प्रमुख वन संरक्षक श्री उमेन्द्र शर्मा, सचिव श्री राज्यपाल श्री चन्द्र प्रकाश, विधि परामर्शी श्री राज्यपाल श्री एस०एस० उपाध्याय, विशेष सचिव चिकित्सा शिक्षा श्री जे०पी० त्रिवेदी, निदेशक आयुर्वेद प्रो० सुरेश चन्द्र, चिकित्साधिकारी आयुर्वेद एवं प्रभारी अधिकारी धन्वन्तरि वाटिका डा० शिव शंकर त्रिपाठी, एन०बी०आर०आई के वैज्ञानिक डा० एस०के० तिवारी, सीमैप के वैज्ञानिक डा० एस०के० सिंह सहित राजभवन के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

चिकित्साधिकारी (आयुर्वेद) एवं प्रभारी अधिकारी धन्वन्तरि वाटिका, आयुर्वेदाचार्य डा० शिव शंकर त्रिपाठी ने स्वागत उद्बोधन में बताया कि आज पूरे विश्व का जड़ी बूटी एवं आयुर्वेदिक औषधियों के प्रति आकर्षण बढ़ा है और उनकी गुणवत्ता पर लोगों का ध्यान पुनः आकृष्ट हुआ है। जड़ी बूटी की यह प्राकृतिक सम्पदा अपने देश में असीमित है जरूरत है इनकी पहचान, संकलन, संरक्षण एवं प्रवर्धन की। इसको ध्यान में रखते हुए 'शतायु की ओर' पत्रक के इस 15वें अंक में कुछ सर्वसुलभ महत्वपूर्ण औषधीय पौधों यथा तुलसी, नीम, गिलोय एवं हरसिंगार के गुण एवं उपयोगों के बारे में सारगर्भित जानकारी का उल्लेख किया गया है।







